

खाद एवं उर्वरक

कृषि में खाद एवं उर्वरक का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है। जिस मिट्टी में पौधों लगाए जाते हैं वह मिट्टी धीरे-धीरे अपनी उर्वरा शक्ति खो देती है। मिट्टी में मौजूद पोषक तत्व और अमिन पौधों द्वारा सोख लिए जाते हैं। इससे यह आवश्यक हो जाता है कि खाद एवं उर्वरक मिट्टी में मिलाकर उसकी उर्वरा शक्ति और गुणवत्ता को बचाया जाए।

खाद

खाद का तात्पर्य जैविक एवं प्राकृतिक खाद से है। इसका प्रभाव पौधा पर क्षीमा जाति से होता है। इसके प्रयोग के बाद तुरन्त सिंगाई की आवश्यकता नहीं होती है। इसमें रूप से तत्वों को नहीं मिलाया जाता है, जिससे यह सस्ता भी होता है।

खाद के प्रयोग से मिट्टी की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतरी होती है। इसके उपयोग से फसल भी अच्छी होती है। खाद के प्रयोग से मिट्टी की शक्ति में वृद्धि हो जाती है।



जैविक खाद के प्रकार :-

* जैविक खाद के 4 प्रकार होते हैं-

1) गोबर खाद

2) कम्पोस्ट खाद

3) हरी खाद

4) खल्ली खाद

1) गोबर खाद :- यह पशुओं के गोबर से पैदा की जाती है। गोबर को किसी स्थान में एक जगह में संकलित करके ढोड़ दिया जाता है। इसे मिट्टी से एक ढिगा जाता है, जिससे इसके पोषक तत्वों की मात्रा तथा पोषक गुण बरकरार रहे।

2) कम्पोस्ट खाद :- इसे खाने की निधि को वर्मिकल्चर कहा जाता है। इनमें सबसे महत्वपूर्ण भूमिका पेंसुला होती है। ये पोषक तत्वों को खा लेते हैं और उसके बाद जो कुछ भी उनके शरीर से मल के रूप में बाहर आता है वह ही खाद के रूप में प्राप्त होता है।

11) हरी खाद :- कुछ विंगेय पौधों की हरी पत्तियों को मिट्टी में दबाकर सड़ने दिया जाता है, जिससे हरी खाद तैयार होती है। इसका उपयोग किचन गार्डन में करते हैं।

12) खल्ली खाद :- खल्ली एवं मलमूल की खाद या सरसों आदि के सड़े पौधों की पत्तियों आदि को ढाँड़े में जमा कर के खाद बनार जाती है। इसके प्रयोग से पौधों को आवश्यक तत्व मिलता है।

उर्वरक

उर्वरक रासायनिक एवं कृत्रिम खाद होते हैं। उर्वरक का प्रभाव पौधों पर शीघ्रता से होने लगता है। इसके प्रयोग के बाद या पहले सिंचाई अधिक आवश्यक होता है।

उसके अधिक उपयोग से पौधों तथा फसलों को हानि भी होती है। उर्वरक का निर्माण बड़े-बड़े कारखानों में ही संभव होता है। इस कारण ये जैविक खाद की तुलना में महंगे होते हैं।



उर्वरक के प्रकार :-

उर्वरक के मुख्यतः 6 प्रकार हैं, जो निम्नलिखित हैं -

- (i) सोडियम
- (ii) अमोनियम सल्फेट एवं यूरिया
- (iii) सल्फर फास्फेट
- (iv) पोटेशियम क्लोराइड
- (v) मिश्रित अमोनियम सल्फेट एवं पोटेशियम नाइट्रेट
- (vi) NPK , DAP इत्यादि